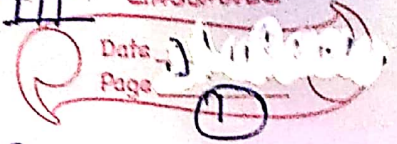


स्वप्ना कुमारी
अभिधि, शिक्षक, हिन्दी
श्री. आर. कॉलेज, रोसड़ा

वीर स्नातक, हिन्दी, प्रथीया
पार्ट मा



हिन्दी कथानी के उद्भाव और विकास पर प्रकाश हार्ने।

गद्य की विधाओं में कथानी का महत्वपूर्ण
स्वान है। अंग्रेजी की छोटी कथानियाँ के
अनुकरण पर सर्वप्रथम कंगला में 'गल्प'
नाम से वैसी ही छोटी कथानियाँ लिखी जाने
लगीं। बाद में उनसे प्रभावित होकर हिन्दी
कथानीकारोंने ने छोटी-छोटी कथानियाँ लिखीं
~~कथानी के माना है~~

कुछ विद्वानों ने हिन्दी कथानी का
आविर्भाव इसा उल्ला खा लिखित 'रानी
केतकी की कथानी' से माना है। लेकिन
इस कथानी में आधुनिक कथानी के लक्षण
नहीं पाये जाते हैं। इसी तरह की दूसरी
कथानियाँ राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दू लिखित
'राजा भोज का सपना' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
कृत 'अद्भूत अर्ध सपना' या कुछ आप
कीली तथा कुछ जगुवीरी, भी दृष्टिगोचर होती
है। पर इन कथानियों में सभी तत्वों का
विकास नहीं हुआ है। साथ ही, इन कथानियों
में न घटनाओं का तारम्य है, न चरित्र-
निरूपण में मनोवैज्ञानिकता।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि भारतेन्दु
और उनके समकालीन लेखकों के सामने

कहानी का रूप पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो पाया था। अंग्रेजी लेखक लेख के द्वारा लिखी गयी शेक्सपीयर के घटनाओं को कहानियों के अनुवाद से कहानियों की कुछ रूप-रेखा सामने अवरुध आ रही थी।

सच तो यह है कि सरस्वती पत्रिका से ही हिन्दी कहानी का वास्तविक प्रारंभ होता है। स्कू और सरस्वती में अंग्रेजी और संस्कृत नाटकों के अनुवाद छपते थे, तो दूसरी ओर बंगला कहानियों के अनुवाद भी छपते थे। इस प्रकार सरस्वती द्वारा हिन्दी कहानी के विकास को बड़ा धक्का मिला। सन 1900 ई० में सरस्वती पत्रिका के प्रथम अंक में किशोरीलाल गोस्वामी लिखित 'इन्दुमति' कहानी आयी जो हिन्दी की पहली मौलिक कहानी है। सन 1902 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'गुलबहार' और मास्टर भगवान दास कृत 'लोगकी चुड़ैल' शीर्षक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। सन 1903 ई० में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'व्यारह वर्ष का सपना' बंगमहिला लिखित 'दुलाई वाली' गिरिजाशंकर वाजपेयी रचित 'पंडित पंडितानी' नामक तीन कहानियाँ प्रकाशित हुईं। 1907 ई० में वीर महिला कृत 'जमुनी न्याय' वृन्दावन लाल वर्मा कृत

राखी बन्ध भाई और भैया शरणगुप्त लिखित
नकली किताब शीषक कहानियाँ प्रकाश में
आयी। इस प्रकार कहानी के विकास में
सरस्वती पत्रिका का योगदान निरन्तर होता
रहा।